

## डॉ. डेव मैथ्यूसन हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 1 परिचय। परिभाषाएं © 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

बाइबिल व्याख्याशास्त्र पर इस पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। यह गॉर्डन कॉलेज में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम पर आधारित है। और इस दौरान मैं जो करने की आशा करता हूँ वह आपको कई चीजों से परिचित कराना है।

जैसा कि हम देखेंगे, हेर्मेनेयुटिक्स एक ऐसा शब्द हो सकता है जिसे बहुत गलत समझा जाता है और इसका उपयोग बहुत व्यापक रूप से किया जाता है और अक्सर कई चीजों को कवर करने के लिए उपयोग किया जाता है। तो मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि सबसे पहले, हम इस व्याख्यान सत्र में इस मुद्दे पर गौर करेंगे कि व्याख्याशास्त्र क्या है। हेर्मेनेयुटिक्स से हमारा क्या तात्पर्य है? और यह व्याख्या और व्याख्या जैसे अन्य शब्दों से कैसे संबंधित है, अन्य शब्द जिनके बारे में आपने उम्मीद से सुना होगा।

हम व्याख्या के विभिन्न तरीकों, आलोचना के विभिन्न तरीकों के बारे में भी थोड़ी बात करेंगे और वे बाइबिल पाठ की व्याख्या और समझने में कैसे उपयोगी हो सकते हैं। हम व्याख्या के इतिहास और व्याख्याशास्त्र के इतिहास के बारे में थोड़ी बात करेंगे। यह समझना महत्वपूर्ण है कि कभी भी हम बैठ कर व्याख्या करना शुरू नहीं कर देते हैं, बल्कि हम उन लोगों की लंबी कतार के अंत में खड़े होते हैं जिन्होंने बाइबिल पाठ के साथ संघर्ष किया है और उस पर विचार किया है और जिन्होंने इसे समझने का प्रयास किया है।

इसलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि हम दूसरों के साथ संबंध में कहां खड़े हैं जो हमसे पहले गए हैं और पाठ की व्याख्या की है। इसलिए एक चीज़ जो मैं चाहूंगा कि आप भी इस पाठ्यक्रम में करें, वह है उन प्रमुख हस्तियों के नाम सीखना जो कुछ व्याख्यात्मक आंदोलनों से जुड़े हैं। तो विचारों के उस समूह को, उम्मीद है कि हम इस समय में कवर कर सकते हैं।

मैं यह प्रश्न पूछकर शुरुआत करना चाहता हूँ कि हेर्मेनेयुटिक्स क्या है और यह क्यों आवश्यक है? बाइबल को पढ़ना और उसकी व्याख्या करना सीखने के लिए हमें व्याख्यानों की एक श्रृंखला के माध्यम से बैठने की आवश्यकता क्यों है? हम बैठ कर इसे क्यों नहीं पढ़ते? और जैसा कि आपने सुना है, शायद मैंने अनगिनत कहानियाँ सुनी हैं जहाँ लोगों ने कहा है, ओह, मुझे इस सब की ज़रूरत नहीं है। मैं बस बैठकर बाइबल पढ़ता हूँ। लेकिन हम यह भी देखने जा रहे हैं कि इस तरह का दृष्टिकोण बाइबिल पाठ को समझने और पढ़ने के तरीके के बारे में कई धारणाओं को प्रकट करता है।

इसलिए मैं आज यह पूछकर शुरुआत करना चाहता हूँ कि हेर्मेनेयुटिक्स क्या है और हमें इसकी आवश्यकता क्यों है? यह क्यों आवश्यक है? सबसे पहले, हेर्मेनेयुटिक्स क्या है? जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, यह एक ऐसा शब्द है जिसे अक्सर विभिन्न तरीकों से समझा जाता है। वास्तव में, जितना अधिक आप इसके बारे में पढ़ते हैं, उतना ही अधिक आप पाते हैं कि इसके कई अर्थ हो सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप किससे बात कर रहे हैं या किसे पढ़ रहे हैं।

कुछ लोगों के लिए, हेर्मेनेयुटिक्स का अर्थ बाइबिल पाठ में सही विधि या सही तकनीक लागू करके व्याख्या के सही तरीकों को लागू करना है।

तभी कोई इसका सही अर्थ निर्धारित कर सकता है। कुछ लोगों के लिए, व्याख्या बाइबिल पाठ का वास्तविक अध्ययन है, न कि केवल सही तरीकों की समझ, बल्कि पाठ का वास्तविक अध्ययन भी है। लेकिन आम तौर पर जिस तरह से आजकल हेर्मेनेयुटिक्स का उपयोग किया जाता है, हालांकि, फिर से, तकनीकी रूप से यह व्याख्यान श्रृंखला सिर्फ इस बारे में बात करने तक ही सीमित नहीं होगी कि कुछ लोग हेर्मेनेयुटिक्स के बारे में क्या सोचते हैं, यह दर्शन है कि हम कैसे समझते हैं और जब हम समझने की कोशिश करते हैं तो हम क्या करते हैं किसी चीज़ का अर्थ।

लेकिन हम अलग-अलग तरीकों के बारे में बात करेंगे और हम अलग-अलग दृष्टिकोणों और व्याख्या के विभिन्न तरीकों पर विचार करने के लिए और अधिक व्यापक रूप से व्यवस्था करेंगे और इस बात पर विचार करेंगे कि वे बाइबिल पाठ की व्याख्या करने में कैसे उपयोगी हो सकते हैं। लेकिन बाइबिल के अध्ययनों में हेर्मेनेयुटिक्स को आम तौर पर अधिक व्यापक रूप से समझा जाने लगा है, जिसका अर्थ केवल बाइबिल पाठ के ध्वनि सिद्धांतों और तकनीकों का अनुप्रयोग नहीं है, बल्कि हेर्मेनेयुटिक्स वास्तव में, सबसे पहले, बाइबिल को समझने की तुलना में अधिक व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा है। व्यापक मानवीय विषयों को हम कैसे समझते हैं, चाहे वह विज्ञान या साहित्य या इतिहास या किसी अन्य अनुशासन में हो, हम इसे कैसे समझते हैं? जब हम कुछ और या संचार के किसी अन्य पहलू को समझने की कोशिश कर रहे हैं तो हम क्या कर रहे हैं? इसलिए जैसा कि हम देखेंगे, हेर्मेनेयुटिक्स बाइबिल अध्ययनों से कहीं आगे बढ़ गया है, फिर भी बाइबिल अध्ययनों के बाहर भी हेर्मेनेयुटिक्स के साथ जो किया जा रहा है, वह बाइबिल के प्रति हमारे दृष्टिकोण और व्याख्या के तरीके को भी प्रभावित करता है। लेकिन हेर्मेनेयुटिक्स, फिर से, तकनीकों के उचित अनुप्रयोग और बाइबिल को समझने के सही तरीकों से अधिक, हेर्मेनेयुटिक्स यह सवाल पूछने लगा है कि किसी चीज़ को समझने का क्या मतलब है? हम कैसे समझें? फिर से, हमारे उद्देश्यों के लिए, हम बाइबिल के पाठ, नए या पुराने नियम के पाठ को समझने के बारे में बात कर रहे हैं, लेकिन हम इसे कैसे समझते हैं? जब हम बाइबिल के पाठ को समझने का प्रयास करते हैं तो हम क्या करते हैं? और इसलिए व्याख्याओं की इस श्रृंखला का एक फोकस यह होगा कि जब हम बाइबिल के पाठ को पढ़ने और समझने की कोशिश करते हैं तो हम क्या कर रहे होते हैं? जब हम इसकी व्याख्या करते हैं तो हम क्या कर रहे होते हैं? हमें समझ कैसे आती है? हेर्मेनेयुटिक्स शब्द, जैसा कि अधिकांश पाठ्यपुस्तकें आपको बताएंगी, हेर्मेनेयुटिक्स शब्द स्वयं एक शब्द है जो ग्रीक शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका उपयोग भगवान हरमास के लिए किया गया था।

यह ग्रीक शब्द हेर्मेन्यूइन से आया है, जिसका अर्थ है अनुवाद करना, समझना, समझाना, व्याख्या करना। और यह शब्द ग्रीक देवता हरमास के लिए इस्तेमाल किया गया था। और जब कोई कुछ समझना चाहता है या कोई देवताओं से संदेश प्राप्त करने के लिए हरमास से परामर्श करने जाता है, तो हरमास एक दुभाषिया या मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है और देवताओं से संदेश को उस व्यक्ति तक पहुंचाता है और उसकी व्याख्या करता है। जानकारी के बारे में पूछताछ कर रहे हैं।

इसलिए उन्होंने एक तरह से कार्य किया, हरमास ने एक मध्यस्थ के रूप में कार्य किया, देवताओं और मनुष्य के संदेश के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य किया। और इसलिए हेर्मेनेयुटिक्स को, एक अर्थ में, बीच-बीच में देखा जा सकता है। यह उस पाठ के बीच एक मध्यस्थ है जिसे हम समझने और उसका अर्थ समझने की कोशिश कर रहे हैं और दुभाषिया के बीच।

मानवीय समझ तब पाठ और हमारे बीच की दूरी को पाटती है ताकि हम चीजों को समझ सकें। और फिर, हमारे उद्देश्यों के लिए, ताकि हम बाइबिल पाठ का अर्थ समझ सकें। तो मूलतः व्याख्याशास्त्र का संबंध इस बात से है कि हम किसी चीज़ को कैसे समझते हैं? जब हम किसी चीज़ को समझने का प्रयास करते हैं तो हम क्या करते हैं? लेकिन हेर्मेनेयुटिक्स की यह समझ अन्य विषयों से कैसे संबंधित है, जैसे कि जिसे हम व्याख्या कहते हैं? हालाँकि बहुत से व्यक्ति व्याख्याशास्त्र और व्याख्या का उपयोग लगभग समान रूप से करेंगे।

यह व्याख्या से किस प्रकार संबंधित है? यह एक ऐसा शब्द है जो आम तौर पर आपके द्वारा किए जाने वाले कार्यों से जुड़ा होगा यदि आप बाइबिल भाषा का पाठ्यक्रम लेते हैं, जैसे कि ग्रीक या हिब्रू व्याख्या। यह उनसे कैसे संबंधित है? यह व्याख्या से किस प्रकार भिन्न है? व्याख्या को आमतौर पर पाठ के अर्थ को उसके मूल संदर्भ और उसके मूल अर्थ में निकालने के लिए ध्वनि सिद्धांतों और तकनीकों के विशिष्ट अनुप्रयोग के रूप में अधिक समझा जाता है। इसलिए व्याख्या एक पाठ की उसके विभिन्न कोणों से जांच कर रही है।

ग्रंथों में साहित्यिक पहलू होते हैं। इनके ऐतिहासिक आयाम भी हैं। बाइबिल ग्रंथों का एक धार्मिक आयाम है।

उनका एक सांस्कृतिक आयाम है, एक भाषाई आयाम है। इसलिए वह व्याख्या विभिन्न कोणों से पाठ की जांच कर रही है, जैसा कि लेखक ने संभवतः मूल रूप से चाहा था और उसके ऐतिहासिक संदर्भ में अर्थ निकालने का प्रयास किया है। लेकिन फिर भी, हेर्मेनेयुटिक्स उससे कहीं अधिक व्यापक है।

यह न केवल सिद्धांतों के अनुप्रयोग के मुद्दे पर आता है, बल्कि हम इसे कैसे समझते हैं? समझने का मतलब क्या है? किसी पाठ की व्याख्या करने का क्या अर्थ है? जब हम किसी पाठ को समझते हैं और उस पर अमल करते हैं तो हम क्या करते हैं? फिर व्याख्या भी हेर्मेनेयुटिक्स से थोड़ी अलग है क्योंकि व्याख्या किसी पाठ को समझने के वास्तविक अभ्यास को संदर्भित करती है। कोई व्यक्ति हेर्मेनेयुटिक्स को इस बारे में सिद्धांत देने के रूप में अधिक मान सकता है कि हम किसी पाठ को समझते समय कैसे समझते हैं और क्या करते हैं। व्याख्या को इसकी वास्तविक समझ, किसी पाठ की वास्तविक व्याख्या या किसी पाठ को समझने के तरीकों के वास्तविक अनुप्रयोग के रूप में अधिक देखा जा सकता है।

तो व्याख्याशास्त्र और व्याख्या दोनों ही प्रश्न पूछते हैं और सवाल उठाते हैं कि हम किसी पाठ को कैसे समझते हैं? जब हम किसी पाठ को समझते हैं तो हम क्या करते हैं? और किसी पाठ को समझने के लिए उपयोग की जाने वाली सही विधियाँ और तकनीकें क्या हैं? इससे एक सवाल उठता है कि जब हम व्याख्याशास्त्र और व्याख्या के बारे में सोचते हैं, तो हम यह सवाल पूछ रहे

होते हैं कि संचार की तीन अलग-अलग विशेषताएं क्या भूमिका निभाती हैं? अर्थात्, लेखक है जो पाठ का निर्माण करता है और स्वयं पाठ भी है, लेखक द्वारा निर्मित उत्पाद जो संचार करता है, और फिर पाठक है जो पाठ को समझने और समझने का प्रयास करता है। तो व्याख्या लेखक, पाठ और पाठक के बारे में प्रश्न पूछती है, विशेष रूप से इनमें से कौन सा या शायद तीनों, लेकिन जब किसी पाठ को समझने की बात आती है तो उनमें से कौन प्राथमिक भूमिका निभाता है? अर्थ कहाँ है? जब हम बाइबिल के पाठ को समझने का प्रयास करते हैं तो हमारा ध्यान किस पर होना चाहिए? क्या हम लेखक से प्रश्न पूछ रहे हैं? क्या हम लेखक की मंशा पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं? यह व्याख्याशास्त्र के उतने ही दृष्टिकोण होंगे जो लेखक के इरादे के रूप में वर्णित होंगे, एक दृष्टिकोण जिसे लेखकीय इरादे के रूप में जाना जाता है। इसलिए हम पाठ के पीछे जाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

ऐतिहासिक रूप से, लोगों को आश्चर्य होता है कि लेखक का इरादा क्या था? इस पाठ का निर्माण करके लेखक क्या संप्रेषित करना चाहता था? इसलिए हेर्मेनेयुटिक्स की एक विशेषता अर्थ के प्राथमिक केंद्र बिंदु के रूप में लेखक और लेखक के इरादे पर ध्यान केंद्रित करना है। व्याख्याशास्त्र की दूसरी विशेषता या दूसरा स्थान जिस पर लोग अक्सर ध्यान केंद्रित करते हैं जब व्याख्याशास्त्र की बात आती है तो वह है पाठ या कुछ लोगों ने इसे पाठ के भीतर ध्यान केंद्रित करना कहा है। इसलिए लेखक पाठ के पीछे जाकर लेखक के इरादे, लेखक क्या करने का प्रयास कर रहा है, के बारे में सवाल पूछ रहा होगा, लेकिन एक पाठ-केंद्रित व्याख्यात्मक पाठ पर ही ध्यान केंद्रित करेगा, तैयार उत्पाद, अनुभवजन्य साक्ष्य जो हमारे पास हैं लिखित पाठ का वह रूप जो अर्थ का प्राथमिक आधार है।

और व्याख्या. तो इस दृष्टिकोण के अनुसार, अक्सर पाठ का अपना एक जीवन होता हुआ दिखाई देता है। तो कुछ लोग यह भी कहेंगे कि लेखक चाहे कोई भी हो और उसने क्या संप्रेषित करने का प्रयास किया है, अब पाठ का अपना एक जीवन है।

और इसलिए पाठ हमारी व्याख्या का प्राथमिक उद्देश्य है। इसलिए हम पुराने या नए नियम के अनुच्छेद को समझने की कोशिश करते हैं और जिस तरह से इसे एक साथ रखा गया है। तीसरा स्थान जहां व्याख्या या अर्थ को झूठ माना जाता है वह पाठक में होगा।

यानी पाठक पाठ का अर्थ समझते हैं। और इसलिए, कुछ लोग यह सुझाव देंगे कि बिना किसी पाठक के इसका अर्थ समझे और इसे पढ़ें, खासकर यदि हमारे पास लेखक तक पहुंच नहीं है, विशेष रूप से बाइबिल के लेखक जो लंबे समय से चले गए हैं, अंततः पाठक को ही पाठ का अर्थ समझना चाहिए। इसलिए हम अलग-अलग संस्कृतियों से आते हैं, हम अलग-अलग पृष्ठभूमियों से आते हैं, हम अलग-अलग दृष्टिकोणों से आते हैं, हम अलग-अलग धार्मिक रुझानों से आते हैं, और यह सब हमारे पाठ पढ़ने के तरीके को प्रभावित करेगा।

और इसलिए कुछ लोग कहेंगे कि प्राथमिक अर्थ पाठक और बाइबिल पाठ को समझने की उसकी क्षमता में निहित है। जैसा कि हम देखेंगे, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ना शुरू करेंगे, विशेष रूप से व्याख्याशास्त्र पर व्याख्यानों की इस श्रृंखला के पहले भाग, पहले आधे भाग में, हम उन

तीन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और ध्यान दें कि कितनी विधियाँ उन तीन पहलुओं के इर्द-गिर्द घूमती हैं।

व्याख्या के तरीके और व्याख्यात्मक दर्शन जो लेखक पर ध्यान केंद्रित करते हैं, अन्य जो पाठ पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और हाल ही में, वे जो मुख्य रूप से पाठक पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और हम ऐतिहासिक रूप से भी देखेंगे कि व्याख्याशास्त्र और व्याख्या का विकास इसी क्रम में हुआ है। लेकिन हम तब प्रश्न पूछेंगे, जब हम व्याख्याशास्त्र और व्याख्या के बारे में सोचेंगे, तो इन तीनों के बीच क्या संबंध है? और क्या उनमें से किसी एक को दूसरों की तुलना में अधिक महत्व और प्रमुखता मिलती है? या क्या वे तीनों समान रूप से मान्य हैं? तो फिर, हम व्याख्या के सिद्धांतों को देखने जा रहे हैं।

हम व्याख्या के इतिहास को देखेंगे और यह बाइबिल पाठ को देखने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित करता है। हम व्याख्या के विभिन्न तरीकों, आलोचना के विभिन्न तरीकों पर गौर करेंगे और वे कैसे हमें बाइबिल पाठ के साथ बातचीत करने में मदद कर सकते हैं। हेर्मेनेयुटिक्स क्यों आवश्यक है? फिर, हम सभी ने किसी ऐसे व्यक्ति की कहानियाँ सुनी हैं जो कहता है, ठीक है, मुझे हेर्मेनेयुटिक्स की आवश्यकता नहीं है।

मुझे बस बैठकर पाठ पढ़ना है। क्यों न सिर्फ बैठ कर बाइबिल ही पढ़ ली जाए? लेकिन जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, वह दृष्टिकोण वास्तव में व्याख्याशास्त्र और समझ के बारे में एक धारणा को प्रकट करता है कि हम किसी पाठ को कैसे पढ़ते हैं और बाइबिल के पाठ की व्याख्या करने का क्या अर्थ है। लेकिन हेर्मेनेयुटिक्स क्यों आवश्यक है? हेर्मेनेयुटिक्स मुख्य रूप से कार्य करता है, और फिर, जब मैं हेर्मेनेयुटिक्स के बारे में बात करता हूँ, तो अक्सर मैं हेर्मेनेयुटिक्स के दार्शनिक अर्थों के बारे में बात कर रहा होता हूँ कि हम इसे कैसे समझते हैं, लेकिन हेर्मेनेयुटिक्स इस संदर्भ में भी बात कर रहा है कि कुछ लोग इसे व्याख्या के रूप में कैसे समझते हैं और व्याख्या करने की सही तकनीक और तरीके हैं। एक बाइबिल पाठ।

लेकिन हेर्मेनेयुटिक्स क्यों आवश्यक है? हेर्मेनेयुटिक्स एक समय में और एक संस्कृति में, एक भाषा में, एक इतिहास में, एक धार्मिक और दार्शनिक और राजनीतिक माहौल में उत्पादित पाठ के बीच एक पुल प्रदान करता है जो हमारे से बहुत अलग है, कम से कम अधिकांश के लिए हम। यह हमारे अपने से बहुत अलग है। इसलिए यदि हम अपने स्वयं के दृष्टिकोण और उस प्राचीन पाठ के बीच अंतर के बारे में नहीं जानते हैं जिसे हम समझने की कोशिश कर रहे हैं तो कभी-कभी हमें गलतफहमी होने की संभावना होती है।

हालाँकि, साथ ही, मुझे विश्वास है कि ऐसी समानताएँ हैं जो समझने के लिए आवश्यक हैं। यदि कोई समानता न होती तो हम बाइबिल के पाठ को समझ ही नहीं पाते। इसलिए इतना बड़ा अंतर या दूरी नहीं है कि यह सोचना निराशाजनक हो कि हम इसे पार कर सकते हैं।

लेकिन हेर्मेनेयुटिक्स आवश्यक है क्योंकि फिर से, हम एक समय, एक वातावरण, एक संस्कृति, एक स्थिति में उत्पादित दस्तावेजों की एक श्रृंखला पढ़ रहे हैं जो कुछ मामलों में बहुत अलग है और हमारे अपने से अलग है। और हेर्मेनेयुटिक्स हमें उस अंतर को पाटने में मदद करता है

ताकि हम बाइबिल पाठ की समझ पर पहुंच सकें। ऐसे कई अंतराल हैं जिन्हें व्याख्याशास्त्र कई तरीकों से पाटने में मदद करता है जिससे बाइबिल का पाठ हमसे दूर हो जाता है।

उदाहरण के लिए, एक अस्थायी दूरी है। बाइबल बाइबिल की व्याख्या से संबंधित है, जहां आप उन ग्रंथों से निपट रहे हैं जो 2000, लगभग 2000 वर्ष और उससे अधिक समय से निर्मित हैं। हमारे अपने अस्तित्व से भी पहले।

तो फिर यह जरूरी है कि हम उस दूरी को पहचानने में सक्षम हों और उस अंतर को पाटने में भी सक्षम हों। मैं इसे एक कहानी के माध्यम से स्पष्ट करना चाहता हूं। मुझे एक समय याद है जब मैं मोंटाना में रहता था और मैं कॉलेज जा रहा था और ट्यूशन डॉलर कमाने में मदद करने के लिए गर्मियों में कोई भी नौकरी करने की कोशिश कर रहा था।

और मुझे याद है कि मैंने एक पशुपालक को लॉग केबिन तोड़ने में मदद की थी। और लॉग केबिन 1900, 1920 या 30 के दशक की शुरुआत में बनाया गया था, कुछ इसी तरह। और इसे अद्यतन कर दिया गया था, लेकिन कुछ लॉग अभी भी बहुत अच्छी स्थिति में थे।

इसलिए इस पशुपालक को उम्मीद थी कि वह केबिन को सावधानी से तोड़ देगा और अधिकांश लकड़ियाँ अपना घर बनाने के लिए बचा लेगा क्योंकि उनमें से बहुत सारी अभी भी बहुत अच्छी स्थिति में थीं और जाहिर तौर पर इससे उसके काफी पैसे बचेंगे। इसलिए उन्होंने मुझे फोन किया और पूछा कि क्या मैं इस केबिन को अलग करने और इन लकड़ियों को बचाने में उनकी मदद करूंगा। तो मैं उनसे मिला और हम इस केबिन में काम करने लगे।

और जब हमने लट्टों को हटाना शुरू किया तो मैंने देखा, लट्टों के बीच में कुछ अखबार थे, जिनका उपयोग अक्सर मोंटाना की ठंडी सर्दियों की हवाओं से बचने के लिए छेदों में भरने के लिए किया जाता था। और मैंने इन अखबारों को देखना और पढ़ना शुरू किया, मैं राजनीतिक कार्टूनों की ओर आकर्षित हुआ। और मैंने उन्हें देखना शुरू किया और महसूस किया कि मुझे पता ही नहीं था कि मैं क्या पढ़ रहा था।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। इसका अधिकांश कारण सिर्फ इसलिए था क्योंकि मैं बहुत अलग समयावधि का साहित्य पढ़ रहा था। हालाँकि यह केवल 75, 80 वर्ष पहले की बात है जब मैं इसे पढ़ रहा था, फिर भी मुझे समझने में परेशानी हो रही थी।

और इसमें से कुछ मेरे लिए पूरी तरह से एक रहस्य था क्योंकि यह उस समयावधि में तैयार किया गया था जिसके बारे में मुझे पता नहीं था कि क्या हो रहा था। दो सहस्राब्दियों पहले और उससे पहले निर्मित ग्रंथों के साथ यह कितना अधिक सच है? तो फिर हेर्मेनेयुटिक्स, हेर्मेनेयुटिक्स और व्याख्या का अध्ययन हमें इस अस्थायी दूरी को पाटने में मदद करता है, खासकर जब लेखक और पाठक परामर्श के लिए यहां नहीं होते हैं। तो हमारे, दुभाषिया और बाइबिल पाठ के बीच एक अस्थायी दूरी है।

और हेर्मेनेयुटिक्स उस अंतर को पाटने का एक तरीका है। एक दूसरी दूरी है और इनमें से कुछ संबंधित हैं। ये सभी अलग-अलग श्रेणियां नहीं हैं।

संभवतः उनके बीच थोड़ा सा ओवरलैप है। लेकिन दुभाषियों के रूप में हमारे और बाइबिल पाठ के बीच एक और दूरी सांस्कृतिक अंतर है। बाइबिल की दुनिया में, चाहे प्राचीन निकट पूर्वी दुनिया हो या न्यू टेस्टामेंट की ग्रीको-रोमन दुनिया एक ऐसी दुनिया को प्रकट करती है जिसमें अक्सर उस दुनिया की तुलना में बहुत अलग संस्कृति और बहुत अलग सांस्कृतिक मूल्य होते हैं जिसमें हम रहते हैं।

कभी-कभी मैं अक्सर पाता हूँ कि तीसरी दुनिया के देशों के दुभाषियों और पाठकों के लिए बाइबिल पाठ पढ़ना आसान होता है क्योंकि वे एक ऐसी संस्कृति से आते हैं जो कई बार बाइबिल पाठ के बहुत करीब होती है और मेरी उत्तरी अमेरिकी व्यक्तिवादी तकनीकी रूप से उन्नत संस्कृति की तुलना में बाइबिल संस्कृति मैं रहता हूँ। लेकिन फिर भी अक्सर सांस्कृतिक मूल्य और मतभेद होते हैं जिन्हें बाइबिल पाठ को समझने की कोशिश में कभी-कभी दूर करना पड़ता है, कम से कम जैसा कि लेखक ने संवाद करने का प्रयास किया है। फिर, हम एक बहुत ही व्यक्तिवादी और तकनीकी युग में रहते हैं, कम से कम उत्तरी अमेरिका में, जहां ऊर्ध्वगामी गतिशीलता और यह तथ्य कि मुझे हर दो सप्ताह में तनख्वाह मिलती है, कभी-कभी मुझे उस संस्कृति से दूर कर देती है जिसने बाइबिल का पाठ तैयार किया है।

आपको कुछ उदाहरण देने के लिए, इनमें से कुछ पर हम बाद में कक्षा में लौट सकते हैं और वास्तव में उनसे निपट सकते हैं। अन्य, मैंने केवल पाठ को समझने की कोशिश में संघर्ष को प्रदर्शित करने के लिए उनका उल्लेख किया है। प्रथम कुरिन्थियों 11.

दूसरा अस्वीकरण जो मुझे करना है वह यह है कि मैं पेशे और रुचि से न्यू टेस्टामेंट का प्रोफेसर हूँ। इसलिए मेरे उदाहरणों का महत्व नए नियम पर होगा, लेकिन मैं जितना संभव हो उतने पुराने नियम के उदाहरण लाने का प्रयास करूंगा और जिनके साथ मैं सहज हूँ उन विभिन्न सिद्धांतों को भी प्रदर्शित करूंगा जिन पर हम काम करेंगे। लेकिन प्रथम कुरिन्थियों 11, एक नए नियम का उदाहरण।

प्रथम कुरिन्थियों 11 में, पॉल चर्च के संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं और उनके संबंधों के मुद्दे को संबोधित करता है क्योंकि यह पूजा के लिए इकट्ठा होता है। और उनका निर्देश मुख्य रूप से महिलाओं के लिए है और वे कैसे भविष्यवाणी करने में सक्षम हैं। और वह इस तथ्य पर चर्चा करना शुरू कर देता है कि वह उन्हें तब तक भविष्यवाणी करने की अनुमति देता है जब तक उनका सिर ठीक से ढका रहता है।

और इस बिंदु पर मेरा उद्देश्य उस पाठ पर विस्तार से विचार करना या समस्या का समाधान करना नहीं है, बल्कि केवल यह प्रदर्शित करना है कि उस पाठ में सिर ढकने का क्या महत्व है? क्या इसका सिर ढकने से कोई समानता है जिससे हम आज परिचित हैं, चाहे वह मुस्लिम संस्कृति में हो या किसी अन्य अभिव्यक्ति में? क्या पॉल सिर ढकने की बात कर रहा है या बालों की, यह उस पाठ में एक और बहस है। इसका मतलब क्या है? यदि हमें प्रथम कुरिन्थियों अध्याय 11 में पॉल के निर्देशों को समझना है तो पॉल किस प्रकार की पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक जानकारी का उपयोग कर रहा है जिससे हमें अवगत होने की आवश्यकता है? तो पहला कुरिन्थियों 11

इसका एक उदाहरण है, मुझे लगता है कि हम उस पाठ को गलत समझने के खतरे में होंगे, कम से कम पॉल उस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के किसी प्रकार के ज्ञान के बिना संवाद करने का प्रयास कर रहा था जिसने पॉल को सिर ढकने से संबंधित निर्देशों की जानकारी दी थी। एक अन्य उदाहरण, प्रकाशितवाक्य अध्याय 13।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 13, जॉन उस समय के रोमन साम्राज्य को एक भयानक जानवर के रूप में चित्रित करता है। और एक सवाल यह है कि जॉन ऐसा क्यों है, न केवल अध्याय 13 में, बल्कि प्रकाशितवाक्य की पूरी किताब में, जॉन सरकार के प्रति नकारात्मक क्यों है? प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जॉन द्वारा रोमन साम्राज्य का चित्रण इतना धूमिल और अंधकारमय क्यों है कि वह इसे इस जानवर के रूप में चित्रित करता है जो नुकसान पहुंचाने के लिए है? खैर, फिर से, इसे अभी हल किए बिना, उत्तर का एक हिस्सा निश्चित रूप से यह है कि पहली शताब्दी के रोमन साम्राज्य में, आप राजनीति और धर्म के मुद्दों को सुलझा नहीं सकते थे। और इसलिए किसी के लिए रोमन साम्राज्य के संदर्भ में शामिल होना, उसमें शामिल होना, जीवन जीना और यहां तक कि जीविकोपार्जन करना कई चुनौतियां लेकर आया क्योंकि यह अक्सर उन्हें मूर्तिपूजक धार्मिक प्रथाओं से समझौता करने में संलग्न करता था।

आधुनिक समय में कम से कम कई बार सरकारों और धर्म को अलग रखा जाता है, लेकिन पहली शताब्दी में, जॉन अपनी आलोचना का जो लक्ष्य बना रहे हैं, उसे तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक हम यह नहीं समझ लेते कि पहली शताब्दी में, धर्म और राजनीति और अर्थव्यवस्था अलग-अलग थे। आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ। और निश्चित रूप से जॉन की रोमन सरकार की आलोचना का एक हिस्सा मूर्तिपूजक धार्मिक प्रथाओं से संबंधित है, यदि आप भी रोम में राजनीतिक और आर्थिक रूप से भाग लेते हैं तो कोई भी इससे जुड़ जाएगा। ल्यूक अध्याय 11.

ल्यूक अध्याय 11, तथाकथित अच्छे सामरी के दृष्टांत का क्या महत्व है? इस तथ्य का क्या महत्व है कि सामरी कहानी का नायक है? फिर से, हम इस दृष्टांत को गलत समझेंगे, खासकर हमारे आधुनिक उत्तरी अमेरिकी संदर्भ में जहां सामरी को पालतू बना दिया गया है। हमारे पास अच्छे सेमेरिटन भोजन पेंटी और अच्छे सेमेरिटन अस्पताल, वगैरह, वगैरह जैसी चीजें हैं। हमने सामरी को पालतू बना लिया है।

लेकिन जैसा कि हम इन व्याख्यानों में कई बार देखेंगे, पहली सदी में सामरी लोगों को उन्होंने इस तरह नहीं देखा होगा, खासकर पहली सदी के यहूदियों को। और इसलिए संस्कृति के बारे में कुछ समझे बिना और सामरी लोगों को कैसे देखा जाता है, कोई भी अच्छे सामरी के दृष्टांत की ताकत को समझने से चूक जाएगा। या ल्यूक 15 और उड़ाऊ पुत्र के प्रसिद्ध दृष्टांत के बारे में क्या? एक बार फिर, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि वर्षों तक, मैंने वह दृष्टांत पढ़ा है और शायद इसका कुछ कारण यह है कि मैं खेत-खलिहानों से घिरे मोंटाना में पला-बढ़ा हूं या कई साल बिताए हैं।

और मैंने खेत की या इस पिता की तस्वीर खींची जो बूनडॉक में कहीं खेत में रह रहा था या समाज से अलग था। मोंटाना में, कभी-कभी आप पांच मील तक ड्राइव कर सकते हैं और फिर भी अपने

ड्राइववे के अंत तक नहीं पहुंच पाते हैं, दूसरे घर के दृश्य की तो बात ही छोड़ दें। तो मैंने कल्पना की कि यह पिता किसी अज्ञात स्थान पर किसी खेत में है।

लेकिन क्या होगा यदि वह एक विशिष्ट मध्य पूर्वी गांव में रह रहा है और हर कोई जानता था कि क्या हो रहा था और हर कोई देख रहा था कि क्या हो रहा था? तो फिर उस पिता का उस बेटे को बधाई देने और गले लगाने के लिए दौड़ने का क्या मतलब था जिसने उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया था? कस्बे में किसी को भी यह याद नहीं होगा कि क्या हुआ। फिर भी, यदि हम संस्कृति को नहीं समझते हैं और यदि हम, जैसा कि मैंने किया, यदि हम अपनी संस्कृति को पढ़ने में बहुत जल्दी करते हैं कि क्या हो रहा है, तो फिर, हम दृष्टांत को गलत समझ सकते हैं या कम से कम, हम कोई महत्वपूर्ण चीज़ छूट सकती है। लेकिन फिर, उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत के साथ, पिता के बाहर दौड़ने और बेटे का अभिवादन करने और समुदाय की निगरानी करने वाली आंखों के सामने उसे गले लगाने का क्या महत्व है? मैं सहमत हूं।

रूथ की किताब. दिलचस्प बात यह है कि रूथ की किताब के अंत में, आपके पास गेट पर बैठे लोगों का एक बहुत ही दिलचस्प संदर्भ है। मेरा मतलब है, क्या वे आलसी हो रहे हैं? और इसलिए हम कभी-कभी कल्पना करते हैं कि महिलाएं शायद काम कर रही हैं, खाना बना रही हैं और सभी प्रकार की चीजें कर रही हैं।

और यहाँ वे लोग हैं जो गेट पर बैठे हैं, बस आलसी हो रहे हैं। जब आप यह पहचानते हैं कि यह वह जगह है जहां नेताओं ने शहर के लिए महत्वपूर्ण व्यवसाय तय करने के लिए मुलाकात की थी, तो पाठ एक अलग रंग लेता है। और इसलिए ये लोग आलसी नहीं हो रहे हैं और बस वहां बैठकर हवा का आनंद ले रहे हैं और बातें कर रहे हैं।

वे संचालन कर रहे हैं, संभवतः व्यवसाय संचालित कर रहे हैं। या हमारी व्यक्तिवादी संस्कृति हमारे कुछ बाइबिल पाठों को पढ़ने के तरीके को कैसे प्रभावित कर सकती है, जिसे बेहतर ढंग से एक ऐसी संस्कृति को संबोधित करने के रूप में समझा जा सकता है जो समुदाय और एक ऐसी संस्कृति के साथ अधिक मेल खाती है जहां व्यक्ति सांप्रदायिक रिश्ते को समझते हैं जिससे वे संबंधित हैं, यह आपके लिए अधिक महत्वपूर्ण है। एक व्यक्ति के रूप में वह समूह था जिससे आप संबंधित हैं। इसलिए हमारे और बाइबिल के पाठों के बीच एक सांस्कृतिक दूरी है जिसके कारण हम पाठ को गलत समझ सकते हैं।

एक ऐतिहासिक दूरी भी है। फिर, यह पिछले दो से संबंधित है, लेकिन बाइबिल के पाठ उन घटनाओं को दर्ज करते हैं और मानते हैं जो हमसे बहुत दूर हैं। और इसके अलावा, अक्सर बाइबिल के पाठ हमें जो कुछ भी घटित हुआ उसका विस्तृत विवरण देने में रुचि नहीं रखते हैं।

और हममें से जो लोग कभी-कभी घटनाओं को देखने के लिए वहां नहीं होते थे, तो हम यह समझने के लिए संघर्ष करते थे कि जो घटना घट रही थी वह क्या थी? घटना की प्रकृति क्या थी? लेखक किस ऐतिहासिक परिस्थिति के बारे में बात कर रहा है और चर्चा कर रहा है? फिर से, उदाहरण के लिए, जॉन अध्याय चार में, और हम पहले ही ल्यूक अध्याय 11, ल्यूक अध्याय 11, अच्छे सामरी के दृष्टांत का उल्लेख कर चुके हैं, लेकिन जॉन अध्याय चार, जहां यीशु कुएं पर

महिला के पास जाता है, जो एक सामरी है। एक बार फिर, हम इन ग्रंथों को गलत समझेंगे यदि हम यहूदी लोगों और सामरी लोगों के बीच विरोध के लंबे इतिहास को समझने में विफल रहते हैं, और इसने यहूदियों के इस निश्चित समूह को देखने के तरीके को कैसे प्रभावित किया है। जब इस पर विचार किया जाता है, तो यह तथ्य कि सामरी एक दृष्टांत का नायक है, और यह तथ्य कि यीशु उससे मिलने जाएंगे, काफी चौंकाने वाला है, और पहले पाठकों के लिए काफी चौंकाने वाला होगा।

ईस्वी में यरूशलेम और उसके मंदिर के विनाश के आसपास की घटनाओं को समझे बिना, किसी को मैथ्यू 24 और मार्क 13, ल्यूक 21 जैसे ग्रंथों को समझने में कठिनाई होगी, जिसमें दर्ज है कि यीशु, मुझे लगता है, कम से कम आंशिक रूप से यरूशलेम के विनाश के आसपास की स्थिति को संबोधित करते हैं। . और पुराने नियम की कथाएँ ऐतिहासिक घटनाओं के सभी प्रकार के संदर्भों से भरी हुई हैं, चाहे वह युद्ध के वृत्तांतों का संदर्भ हो, या इज़राइल में राजनीतिक स्थिति का संदर्भ हो। लेकिन मुद्दा यह है कि, अक्सर एक ऐतिहासिक दूरी होती है जो हमें बाइबिल के पाठ से अलग करती है, और व्याख्याशास्त्र हमें उस अंतर को पाटने में मदद करता है।

एक और दूरी भाषाई दूरी भी है। पुराना और नया नियम कम से कम दो भाषाओं में लिखे गए हैं। पुराने नियम में तीसरी भाषा अरामाइक के कुछ ग्रंथों के अंश भी शामिल हैं।

लेकिन ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट दो भाषाओं में लिखे गए हैं जो हमारी भाषा से बहुत अलग हैं, ज्यादातर हमारी अपनी भाषा से। और इसलिए, एक बार फिर, व्याख्याशास्त्र और व्याख्या के सिद्धांत हमें उस अंतर को पाटने में मदद करते हैं और उस दूरी को दूर करने में हमारी मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, पुराने और नए टेस्टामेंट में, जैसा कि आज इसका उपयोग किया जाता है, इसके विपरीत, और हम बाद में अनुवाद के तहत इस मुद्दे पर लौटेंगे, अक्सर हिब्रू और ग्रीक शब्द जिन्हें हम अक्सर अंग्रेजी में मनुष्य का अनुवाद करते हैं, या कर सकते हैं पुराने और नए टेस्टामेंट में पुरुष या पुरुष, या भाई, बहुत ही पुल्लिंग शब्दों का अनुवाद किया जाना ऐसे शब्द प्रतीत होते हैं जिनका उपयोग पुरुष और महिला दोनों के समूहों के लिए किया जा सकता है।

और जैसा कि मैं इसे समझता हूं, यह कम से कम प्रमुख होता जा रहा है, खासकर अंग्रेजी भाषा और कई अन्य भाषाओं में भी। इसलिए पुराने और नए नियम के पाठ में भाषा का उपयोग हमारी कुछ भाषाओं की तुलना में बहुत अलग तरीके से किया जा सकता है, विशेष रूप से लिंग प्रकार की भाषा का। या शब्दों का मतलब शायद ही कभी एक ही होता है, यहां तक कि ऐसे शब्द भी जो समान मूल से उत्पन्न होते हैं, या ऐसे शब्द जो किसी अन्य भाषा से, एक भाषा से, किसी पिछली भाषा से व्युत्पन्न होते हैं।

शब्द के अर्थ लगभग कभी भी पूरी तरह से ओवरलैप नहीं होते। इसलिए, भले ही हमारे पास एक मोटा समकक्ष है, हम यह नहीं मान सकते कि एक भाषा में एक शब्द का अर्थ हिब्रू या ग्रीक शब्द के अर्थ के करीब होगा। मुझे अभी भी याद है, यहां तक कि मेरी एक सेमिनरी कक्षा में भी, एक छात्र इस तथ्य से संघर्ष कर रहा था कि पॉल आशा शब्द का उपयोग करेगा।

जाहिर है, उन्होंने अंग्रेजी शब्द होप का इस्तेमाल नहीं किया, लेकिन हम ग्रीक शब्द एल्पिस का अनुवाद करते हैं, जिसे पॉल ने अंग्रेजी शब्द होप के साथ इस्तेमाल किया था। और छात्र ने संघर्ष किया कि पॉल ईसाई धर्म और यीशु की वापसी को केवल एक आशा के रूप में देखेगा। और समस्या का एक हिस्सा यह था कि वह हमारे अंग्रेजी शब्द होप के साथ पॉल के शब्द के उपयोग को समझने की कोशिश कर रहा था, और यह समझने में विफलता के कारण काफी समय तक संघर्ष करता रहा कि शब्द बहुत कम ही, यदि कभी भी, भाषाओं के बीच ओवरलैप होते हैं।

एक और दिलचस्प चीज़ जिसमें मेरी हमेशा रुचि रहती है, उदाहरण के लिए, जब ग्रीक काल की व्याख्या करने की बात आती है। अंग्रेजी के विपरीत, जिसका अभिविन्यास मुख्य रूप से अस्थायी है, हमारे पास अतीत, वर्तमान और भविष्य है, ग्रीक क्रिया काल मुख्य रूप से समय का संकेत नहीं देते हैं। इसका संकेत अन्य माध्यमों से दिया गया।

ताकि जब कोई ग्रीक पाठ के साथ काम कर रहा हो, तो हमें ग्रीक काल या यहां तक कि हिब्रू काल की व्याख्या करते समय सावधान रहना होगा, जिसे हम नहीं पढ़ रहे हैं, उदाहरण के लिए, हमारी अंग्रेजी क्रिया प्रणाली और काल प्रणाली। ग्रीक या हिब्रू तरीका। तो ये तो बस कुछ उदाहरण हैं कि कैसे उस भाषा के बीच भाषाई अंतर है जिसमें पुराना नया नियम लिखा गया था, और जिस भाषा में हम इसे समझने की कोशिश करते हैं, मेरे लिए, आधुनिक समय की, 21वीं सदी की अंग्रेजी। पाँचवाँ अंतर है, या पाँचवीं दूरी है, और वह भौगोलिक अंतर है।

इसलिए एक अस्थायी दूरी है, बाइबिल के पाठ बहुत अलग समय में लिखे गए थे, कम से कम लगभग 2000 सहस्राब्दी और पहले, हमारे समय से। इससे सांस्कृतिक अंतर भी पैदा होता है। बाइबिल का पाठ एक ऐसी संस्कृति की पुष्टि करता है जिसके सांस्कृतिक मूल्य हमारे से बहुत भिन्न हैं।

एक ऐतिहासिक अंतर है। बाइबिल का पाठ घटनाओं को संदर्भित करता है, और उन घटनाओं को मानता है जिनसे, एक बार फिर, हम अलग हो गए हैं। इसमें एक भाषाई अंतर भी है कि बाइबिल के पाठ उन भाषाओं में लिखे गए हैं जो उन भाषाओं से मेल भी खा सकती हैं जो हम आज बोलते हैं।

तो फिर, अगला अंतर भौगोलिक अंतर है। ऐसी कई दिलचस्प भौगोलिक विशेषताएं हैं, जिनका, फिर से, बाइबिल पाठ में उल्लेख किया गया है या माना गया है, जो आधुनिक पाठकों से परिचित नहीं हो सकते हैं, लेकिन वे बाइबिल पाठ को समझने के हमारे तरीके को प्रभावित कर सकते हैं। और फिर, व्याख्याशास्त्र और व्याख्या हमें उस अंतर को पाटने में मदद करते हैं।

उदाहरण के लिए, पुराने नियम से एक दिलचस्प बात, जब योना भाग जाता है, योना की किताब में, भगवान उसे अश्शूरियों के पास जाने और सुसमाचार का प्रचार करने के लिए कहते हैं, और योना इनकार कर देता है और तर्शाश भाग जाता है। यदि आप मानचित्र को देखें, तो आप पाएंगे कि योना सिर्फ अगले दरवाजे वाले शहर में नहीं गया था। योना जहाँ तक तुम जा सकते थे, चला गया।

लेकिन जब तक कोई व्यक्ति उस भूमि के भूगोल से परिचित नहीं होता, वह यह नहीं देख पाता कि योना किस चरम सीमा तक जाएगा, इस दुष्ट, भयानक राष्ट्र में उपदेश देने के लिए नहीं जाएगा, जहां जाने के लिए भगवान उसे बुला रहे थे। एक और बहुत दिलचस्प उदाहरण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से आता है, और अध्यायों के पहले जोड़े में से एक पत्र, प्रकाशितवाक्य अध्याय तीन, और लौदीकिया में चर्च को एक पत्र। और श्लोक 15 से शुरू करके, मैं अध्याय तीन के श्लोक 15 और 16 पढ़ूंगा।

जॉन कहते हैं, वास्तव में जॉन यीशु के शब्दों को उद्धृत कर रहे हैं, यीशु के शब्दों को लौदीकिया के चर्च में संप्रेषित कर रहे हैं, जो एशिया माइनर, आधुनिक तुर्की के सात चर्चों में से एक है, जहां जॉन अपने रहस्योद्घाटन, अपने सर्वनाश को संबोधित कर रहे थे। परन्तु पद 15 से 16 में यीशु यूहन्ना के द्वारा कलीसिया से कहता है, वह कहता है, मैं तेरे कामों को जानता हूँ, कि तू न तो गरम है, और न ठंडा है। काश आप या तो एक या अन्य होते।

इसलिये कि तू गुनगुना है, न गर्म, न ठंडा, मैं तुझे अपने मुंह में से उगलने पर हूँ। अब, आमतौर पर जब हम इस पाठ की व्याख्या करते हैं और जिस तरह से मुझे इसे पढ़ना सिखाया जाता है वह मेरे अपने दृष्टिकोण से होता है। आमतौर पर गर्म और ठंडे को द्विआधारी विपरीत के रूप में देखा जाता था।

गर्म एक अच्छी चीज़ थी और ठंडा एक बुरी चीज़ थी। गर्म होने का मतलब उस तरह के धार्मिक शब्दजाल में होना है जिसमें मैं बड़ा हुआ हूँ। गर्म होने का मतलब है मसीह के लिए आग में जलना और ठंडा होने का मतलब है विमुख होना, पूरी तरह से मसीह के प्रति विरोधी होना, आज्ञा मानने से इनकार करना, अनुसरण करने से इंकार करना, मसीह से कोई लेना-देना नहीं रखना।

और फिर गुनगुने को बीच में रखा गया। तो आप यहां उत्साहित हैं, जो अच्छी बात है। कोई है कि मसीह के साथ उनका रिश्ता है और उनकी गवाही जीवंत है और यहां ठंड है।

वे पूरी तरह से मर चुके हैं और विमुख हो चुके हैं और मसीह से कोई लेना-देना नहीं चाहते हैं। और बीच-बीच में गुनगुना है। ये वे ईसाई हैं जो इच्छाधारी हैं और जैसा कि मुझे बताया गया था, वे बाड़ पर चढ़ जाते हैं।

और वे मसीह को अस्वीकार या अस्वीकार नहीं करना चाहते, लेकिन वे वास्तव में कोई रुख नहीं अपनाएंगे। वे बस वहां बीच में बैठना चाहते हैं। और इसलिए जब मसीह कहते हैं, काश तुम या तो गर्म या ठंडे होते, इसके बजाय तुम गुनगुने होते, तो वह कह रहे हैं, कम से कम मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए आग में जलते और मेरा अनुसरण करते और पूर्ण आज्ञाकारिता करते।

या कम से कम मैं चाहता हूँ कि आप मेरे खिलाफ खड़े हों, लेकिन कम से कम यह तो बताएं कि आप कहां खड़े हैं, बीच में न बैठें। और शायद आपने प्रकाशितवाक्य 3, 15 और 16 को सुना होगा और इसी पंक्ति को समझा है। तो जॉन उन्हें कुछ करने के लिए बुला रहा है।

बस बाड़ की सवारी मत करो। भले ही आप ईसा मसीह से नफरत करते हों या उन्हें अस्वीकार करते हों, कम से कम ऐसा करें। बाड़ सवार मत बनो।

हालाँकि, मुझे लगता है कि इस पाठ को समझने का तरीका लौदीकिया और आसपास के क्षेत्रों के भूगोल के बारे में कुछ समझना है। और यह इस पाठ को समझने पर एक पूरी तरह से अलग मोड़ देता है। लॉडिसिया पहली सदी का एक विशिष्ट ग्रीको-रोमन शहर था, सिवाय इसके कि इसमें एक समस्या थी जिसे आमतौर पर ग्रीको-रोमन दुनिया में पहली सदी के शहरों के लिए महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण माना जाता था।

और वह यह कि लौदीकिया में पानी की अच्छी आपूर्ति नहीं थी। लेकिन यह दिलचस्प है, लौदीकिया के निकट दो शहरों में ऐसा हुआ। उन शहरों में से एक हिएरापोलिस नाम का शहर था।

और हिएरापोलिस शहर वास्तव में अपने औषधीय गर्म झरनों, अपने खनिज झरनों के लिए प्रसिद्ध था, और कभी-कभी लोग अपने उपचार और औषधीय महत्व के लिए इन झरनों में बैठने के लिए कुछ दूरी से भी आते थे। लौदीकिया से अधिक दूर नहीं एक और नगर था जो कुलुस्से के नाम से जाना जाता था। और कोलोसे की ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से भी एक ऐसी प्रतिष्ठा थी जो अपने ताज़गी भरे ठंडे पानी के लिए जानी जाती थी जो पीने के लिए अच्छा था।

हालाँकि समस्या यह थी कि लौदीसिया को अपना पानी कहीं और से लाना था। और जब वह वहां पहुंचा, तो पानी गुनगुना था और वह बहुत ही अजीब था। यह वास्तव में ज्यादा के लिए अच्छा नहीं था।

और मुझे लगता है कि जॉन जो कह रहा है, वह क्षेत्र के भूगोल पर आधारित है, वह कह रहा है, काश आप गर्म या ठंडे होते। अर्थात्, मैं चाहता हूँ कि तुम गर्म होते, लौदीकिया के पानी की तरह जो उपचार के लिए अच्छा है, या मैं चाहता हूँ कि तुम ठंडे होते, कुलुस्से के ताज़ा पानी की तरह। इसके बजाय, आप अपनी स्वयं की जल आपूर्ति की तरह हैं।

तुम गुनगुने हो, तुम बेकार हो, और मैं तुम्हें तुम्हारे मुँह से उगलने वाला हूँ। मेरा मतलब है, आप जानते हैं कि गुनगुना, बासी, स्थिर पानी कैसा होता है। उसे कोई पीना नहीं चाहता।

इसलिए जॉन पाठकों को यह याद दिलाने के लिए क्षेत्र के भूगोल का चित्रण कर रहा है कि वे अपनी जल आपूर्ति की तरह न बनें। इसलिए जब हम पाठ को उस परिप्रेक्ष्य से पढ़ते हैं, तो यह एक बिल्कुल अलग परिप्रेक्ष्य प्राप्त कर लेता है। गर्म और अच्छा दोनों सकारात्मक रूपक हैं।

वे विपरीत नहीं हैं, कम से कम इस पाठ में। गरम होना लौदीकिया के जल के समान है। ठंडा होना कुलुस्से के अच्छे, ठंडे, ताज़ा पानी की तरह होना है।

गुनगुना होने का मतलब बीच में कहीं सवारी करना नहीं है। यह बिल्कुल विपरीत होना है। यह बेकार और बेकार होना है।

और यह वही है जो जॉन ने लौदीकियावासियों को ऐसा करने की चेतावनी दी है, ताकि वे अपने स्वयं के पानी की आपूर्ति की तरह बेकार और बेकार होने की गवाही खो दें। यह किसी भी चीज़

के लिए अच्छा नहीं है, पीने या किसी और चीज़ के लिए अच्छा नहीं है। गर्म आध्यात्मिक तापमान, गर्म या ठंडा, की तुलना में एक बेहतर आधुनिक सादृश्य यह होगा कि आप में से कितने लोग, यदि आप किसी कैफे या रेस्तरां में जाते हैं, तो वेटर लगातार आपका पानी, आपका ठंडा बर्फ का पानी क्यों भरता है? क्योंकि गुनगुना पानी किसी को पसंद नहीं होता।

वे आपका कॉफ़ी कप क्यों भरते रहते हैं? क्योंकि गुनगुनी कॉफ़ी किसी को पसंद नहीं होती। आपको गर्म पसंद है, आपको अपने पेय पदार्थ गर्म या ठंडे पसंद हैं। मैं जानता हूँ कि इसमें कुछ अपवाद भी हैं।

या हम में से अधिकांश, जब आप स्नान करते हैं, तो आप आमतौर पर गर्म स्नान पसंद करते हैं, गुनगुना नहीं। इसलिए, मुझे लगता है कि ये उपमाएँ, जॉन जो कर रहा है उसके लिए बेहतर उपयुक्तता प्रदान करती हैं। और फिर, जॉन के निर्देश मुख्य रूप से क्षेत्र के भूगोल, लाओदीसिया और हिएरापोलिस और कोलोसे और उनकी जल आपूर्ति पर निर्भर करते हैं।

और मुझे लगता है कि जॉन दोनों का यही इरादा था, और मुझे लगता है कि पाठकों ने तुरंत अपने दिन में उन संघों को उठा लिया होगा। इस तथ्य के अलावा कि मैं बाइबल में ऐसा कहीं नहीं जानता जहाँ ईश्वर ने कभी बुलाया हो, या ईसा मसीह ने कभी अपने लोगों को उन्हें अस्वीकार करने, या तो उन्हें अस्वीकार करने या उन्हें स्वीकार करने के लिए कहा हो। यह हमेशा मसीह को गले लगाने और पहचानने, ऐसा न करने के परिणामों से बचने के लिए है।

इसलिए मुझे लगता है कि भौगोलिक पृष्ठभूमि इस पाठ को पढ़ने के लिए अधिक आकर्षक बनाती है। एक आखिरी और अंतिम दूरी साहित्यिक दूरी है। वह यह है कि पुराने नए नियम के पाठ ऐसे साहित्यिक माहौल में तैयार किए गए हैं जो कई मायनों में हमारे माहौल से बहुत अलग है।

यानी पुराना नया नियम उन साहित्यिक प्रकारों से बना है जिनमें हमारे अपने समय के साहित्यिक प्रकारों और हमारे अपने समय के साहित्यिक मीडिया के साथ समानताएं हो भी सकती हैं और नहीं भी। उदाहरण के लिए, कुछ उदाहरण जिनमें कुछ पत्राचार हो सकता है वे आख्यान और कहानियाँ होंगे, साथ ही पत्र-पत्रिका साहित्य भी होंगे। हम कहानियाँ पढ़ते हैं और हम आख्यान पढ़ते हैं, हम आख्यान और कहानियाँ लिखते हैं, हम पत्र पढ़ते और लिखते हैं।

इसलिए हम उस तरह के संचार से कुछ परिचित हैं, लेकिन फिर भी हम यह नहीं मान सकते कि कहानी लेखन और कथा लेखन और ऐतिहासिक रिकॉर्डिंग या पत्र या कविता लिखना उसी तरह था जैसा हम आज करते हैं। और वास्तव में, ऐसे साहित्यिक प्रकार भी हो सकते हैं जिनका हमारे आधुनिक समय से कोई मेल नहीं है। उदाहरण के लिए, आपने आखिरी बार कब सर्वनाश पढ़ा या लिखा था? या आखिरी बार आपने भविष्यवाणी कब पढ़ी थी? कठिनाई को और बढ़ाने वाली बात यह है कि टेक्स्टिंग की शुरुआत के साथ हमारे पास संचार का एक बिल्कुल अलग माध्यम है और संचार के विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक साधन हैं जो एक तरह से पूरी तरह से अलग साहित्यिक शैली का निर्माण करते हैं।

लेकिन पुराने नए नियम को समझने के लिए, हमें विभिन्न साहित्यिक प्रकारों के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है, जिसमें पुराने नए नियम के लेखकों ने लिखा था और उस वातावरण का निर्माण किया था जिसमें उन्होंने दस्तावेज़ तैयार किए थे। और हम फिर से यह नहीं मान सकते कि हमारे समान साहित्यिक प्रकार आवश्यक रूप से समान हैं। तो वहाँ एक साहित्यिक अंतर है, एक साहित्यिक दूरी जिसे व्याख्या और व्याख्याशास्त्र हमें दूर करने में मदद करते हैं।

तो हेर्मेनेयुटिक्स, संक्षेप में कहें तो, हेर्मेनेयुटिक्स इस पर एक प्रतिबिंब है कि हम कैसे समझते हैं। जब हम कोई पाठ पढ़ते हैं तो हम क्या करते हैं? जब हम कुछ समझते हैं तो हम क्या कर रहे होते हैं? हेर्मेनेयुटिक्स हमें उस पर चिंतन करने और हम इसे कैसे करते हैं इसके बारे में अधिक जानबूझकर होने में मदद करता है। व्याख्या, हेर्मेनेयुटिक्स व्याख्या और व्याख्या उन तरीकों पर भी ध्यान केंद्रित करती है जिनका उपयोग हम बाइबिल पाठ की व्याख्या के लिए करते हैं।

बाइबिल के पाठ को समझने और उसकी व्याख्या करने के लिए कौन सी विधियाँ और तकनीकें आवश्यक हैं? लेकिन ये आवश्यक हैं क्योंकि हम दस्तावेजों की एक श्रृंखला के साथ काम कर रहे हैं जो कई मायनों में हमसे बहुत दूर हैं, हालांकि एक समानता है जो हमें कुछ हद तक समझने में मदद करती है, एक दूरी भी है, चाहे वह अस्थायी दूरी हो कि दस्तावेज़ हैं अलग-अलग समय में उत्पन्न, एक सांस्कृतिक अंतर यह है कि बाइबिल के पाठ में संदर्भों के पीछे विभिन्न सांस्कृतिक मूल्य निहित हैं, चाहे वह ऐतिहासिक घटनाएं हों, चाहे वह भौगोलिक दूरी हो या भाषाई अंतर या साहित्यिक शैली का अंतर, विभिन्न साहित्यिक प्रकार। हेर्मेनेयुटिक्स और व्याख्या हमें इन दूरियों के बीच की खाई को पाटने में मदद करती है ताकि हम उम्मीद से बाइबिल पाठ की अधिक जानकारीपूर्ण समझ पर पहुंच सकें। अब, हम अगले व्याख्यान में क्या करेंगे, हम देखेंगे और सवाल पूछेंगे कि बाइबिल पाठ की व्याख्या करने के लिए हम बाइबिल के बारे में क्या धारणा लाते हैं? यद्यपि हमने किसी भी मानवीय अनुशासन को कवर करने के लिए हेर्मेनेयुटिक्स की सीमाओं को बहुत व्यापक रूप से देखा है जहां समझ प्रमुख है, हम बाइबिल के ग्रंथों की व्याख्या करने से चिंतित हैं।

तो बाइबिल के पाठ की व्याख्या करने और समझने के तरीके को कौन सी धारणाएँ निर्देशित करती हैं? इसलिए अगला व्याख्यान मुख्य रूप से बाइबिल के चरित्र पर केंद्रित होगा, विशेषकर प्रेरणा पर। हमारा उससे क्या मतलब है? बाइबिल पाठ के बारे में वह क्या कहता है? और यह हमारे पुराने और नए नियम की व्याख्या करने के तरीके को कैसे प्रभावित और प्रभावित करता है?